



ॐ नमः श्री दत्ते नमः ॥ ॥ अथ उवस्थापनविधिम्ब्रू ॥ ॥
वंधिलाथाय ॥ रुक्मिणावमालकापट्टवासनवाय ॥ तायहा
ल ॥ पूजातलतादीपवाकायावनासिय ॥ पाणायामन्यासया
य ॥ ॥ थनकुलभावनतीर्थभावनसमयभावनयाय ॥ ॥
थनजंगमिनथनविधिः ॥ तीर्थसूद्धिकायावशिकायाय ॥
सतयमंग ॥ ॐ कीर्तिप्रदम् ॥ ॐ उयचलुनिष्पदिनिहं हंस

दात्रकं त्वं मां कंसः मृश्वरत्रनमः स्वाहापापूज ॥ ॥ अथ प
सकथनं ॥ मंग ॥ ॐ जं जां त्रं च अथेपापूज ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
थेपापूज ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ अथेपापूज ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ अथेपापूज ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
पापूज ॥ ॐ नः ॐ निचलि काथेपापूज ॥ ॥ हानं निकागया
दथस ॥ ॐ कीर्तिः श्रीमहादेवचलि कायायनेपापूज ॥ ॥

२
 नितगुलिपलपतिपापिवनयाकागसकथनंतय॥ ॐ उं मा
 येपापू॥ ॐ विऊयायेपापू॥ ॐ जूडितायेपापू॥ ॐ लू
 जपनाडि ॐ तायेपापू॥ ॐ ॐ उं तनयेपापू॥ ॐ ॐ
 रुं तनयेपापू॥ ॐ माहने ॐ पापू॥ ॐ जाकर्व ॐ
 पापू॥ ॥ हानं ॐ दथसतय॥ ॐ तंग ॐ वगिचलिका
 यायनिरुम्यथयेपापू॥ ॥ ॐ याकागयाकागमया

वाकसकथनंतय॥ ॐ वृद्धा ॐ पापू॥ ॐ माहने ॐ पापू॥
 ४ ॐ कोमायेपापू॥ ॐ वेपू ॐ पापू॥ ॐ तं वा ॐ पापू॥ ॐ पं ॐ
 ॐ पापू॥ ॐ यं ॐ पापू॥ ॐ गं ॐ पापू॥ ॐ थं ग
 ॐ गगितथनरुल॥ ॥ थदवनरिलायरुल॥ गं ॐ हा ला॥
 रुिनपय॥ रुियादवनतलसयाथपातायेनयाय॥ ॥
 कापायाथं ॐ गगितथन॥ ॥ विथस्वानरुल॥ लंखनस्ना

लावहः॥ तावत्सर्वं सचित्रं कालं चलस्थाप्य स्थिता हव॥ स्थिता ह
वमहादविदवा नाम नूजाधिय॥ यावद्द गमिपर्यन्तं तावत्सर्वः
स्थितमात्रतः॥ जस्मन्स्वप्नसिद्धिजयकामनयाणी उग्रचण्ड
दवीपात्राय गयवस्थापनं चलस्थाप्य स्थिता हव ३ ॥ ता य
हाल॥ नमस्कात्रयाय॥ ॥ धनपूजा ज्ञानरथयाय॥ नासिया
योनायामन्यासयाय॥ सूर्याय॥ अथादिवाक्॥ जस्मन्स्वप्न

सिद्धिजयकामनार्थपात्राय गयवस्थापनं उग्रचण्डद्वयार्चन
निमित्तार्थं कर्तुं श्रीसूर्यायार्चनमः॥ पूष्यनमः॥ ॥ गुरुनम
स्कात्र॥ न्यासाद्यपि गुरुपूजा॥ हनसुद्धि॥ ज्ञानपूजा॥ ॥ धन
भादनीरुयज्जुक्क॥ ॥ मालिनीवन॥ ॥ धनपर्वतव
लिविग॥ आसनपूजा॥ उमयूनासनाय पापूजा॥ अर्जुलि॥ उं
शीकीकृतपुण्ड्रकनाथाय पापूजा॥ ३॥ वलि॥ ॥ उन्नना

सनायपापू॥ यंउलि॥ कांकीं॥ कः॥ शरुपालायपापू॥ ३ ॥
 वलि॥ ॥ उं॥ सिंहासनायपापू॥ यंउलि॥ उं॥ यां॥ सर्वयागिनी
 ह्यः॥ पापू॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ उं॥ येमासनायपापू॥ यंउलि॥ उं॥
 सु॥ सिद्धिचामुयेपापू॥ ३ ॥ वलि॥ ॥ उं॥ मूषासनायपापू
 ३॥ यंउलि॥ उं॥ भंगीगंगः॥ ग्लेशीकूलगंगेश्वरायपापू॥
 ३ ॥ वलि॥ मूडा॥ तर्जनीदण्डयानिकायगङ्गामूडान्दगंगयत्॥

विन्द॥ समयकृप॥ ऊप॥ श्रीं॥ १०॥ कां॥ यां॥ सु॥ ॥ ॥
 ९०
 का॥ दवीपू॥ विगाखं॥ त्वरं॥ गगिकर्त॥ शरुपाल॥ विनर्गया
 दवीयागिनीदेसकलतयहरीत्रकचामुठिकाख्या॥ नोमिगी
 विघ्नकर्गपत्रमसूखकर्त॥ यंचकं॥ यद्रुचं॥ तच्चकपू॥ कामां॥ ह
 त॥ तयसदासंगदायत्कथा॥ यंचवलयचनवि॥ धरुत्सर्ववि
 धिपत्रिपूर्णममु॥ विद्विष॥ ॥ ००॥ निर्यंचवलिविधिः॥

११

थनदव जावाहनादि गुत्र्या उपद गदका पूजा या य ॥ वलिम
 लथा सम (थे कल ॥ ॥ थनवि (गष पूजा ॥ न्यास ॥ उं मृ य ह न
 ज स्ता य रु ॥ उं उं कीं ना उ पु द जं गु ष्टा र्था नमः ॥ इं उ ग च (उ
 न उं नी र्था स्त्रा हा ॥ उं वि प्र म दि नी म ध्मा र्था व ष ॥ इं इं स
 दा न रु न रु ज ना मि क्ता र्था इं ॥ त्वां मां इं सः क नि ष्टा र्था वी ष ॥
 उं मृ य ह न ज स्ता य रु ॥ ॥ उं कीं ना उ पु द ह द या य नमः ॥

१२

इं उ ग च (उ मि न स स्त्रा हा ॥ वि प्र म दि नी मि र्था य व ष ॥ इं इं
 स दा न रु न रु क व चा य इं ॥ त्वां मां इं न रु य या य वी ष ॥ मृ य
 ह न ज स्ता य रु ॥ ॥ आ स न न य ॥ उं आ धा न ग क थ पा पू
 ज ॥ उं ज न ना स ना य पा पू ज ॥ उं वं आ स ना य पा पू ज ॥ उं ना ला
 स ना य पा पू ज ॥ उं पं आ स ना य पा पू ज ॥ उं पं आ स ना य पा पू ज ॥
 उं कं ग रा स ना य पा पू ज ॥ उं कं नि का स ना य पा पू ज ॥ उं पं आ स

१३

नायपापू॥ उं सिंहसनायपापू॥ उं मंदिवासनायपापू॥ उं
 गुम्हासनायपापू॥ उं निगुम्हासनायपापू॥ ॥ ध्यानं ॥ उ
 यचञ्जमहादवीधायकगवतीनिवा॥ तफचामीकनामासा
 विष्काटिसमपुगा॥ यीनवक्रस्थलागमनिनगाचात्रहासि
 नी॥ किरीटिकुल्लाकात्रीकयूनामगिनूपूना॥ तल्लमालादि
 त्रिगुणहानमालावल्लभितं॥ जूहादगउजाकानादिव्यवस्त्र

१४

गरुषिमा॥ स्वर्जवागंतथाचक्रवर्जकगवनाधनी॥ उमर्गु
 लपाठचक्रिकिणेषुविनाडिता॥ रुटर्कधनरुसंयगदाघटा
 स्रग्भारितं॥ पागंतर्जनीदसंयस्वद्वीर्गकगपागर्क॥ विनम
 डातथासिद्धिसिंहासनापनिस्थिती॥ चर्वध्यामहादवीरग
 वतीनभासुतं॥ लषाः वाठगहसाचस्वद्वीर्गउमर्गुविना
 नूदचञ्जमहादवीधायकगवतीनिवा॥ तफचामीकनामासा
 विष्काटिसमपुगा॥ यीनवक्रस्थलागमनिनगाचात्रहासि
 नी॥ किरीटिकुल्लाकात्रीकयूनामगिनूपूना॥ तल्लमालादि
 त्रिगुणहानमालावल्लभितं॥ जूहादगउजाकानादिव्यवस्त्र

वचनपतिचलिका॥ नवमीवागवचमध्वस्थानिपुण
 न्विता॥ प्राचनानात्रणकृष्णनीलागुकाचधूमिका॥ पीताचर्पा
 उवाङ्ग्याजालीराहनिर्मस्थिता॥ मदिषस्थपमानगम्भीरक
 तगदमृष्टिका॥ स्थाप्यवृक्षनपक्कावात्रउचउदितःकमाना
 १५ चवन्धामहादवीरगदनीनमासुय॥ ध्यानपूज्यपापू॥ ॥
 जावाहनादिनय॥ ॥ यंजलि॥ कुंकीनाउपदक्षुंउगवच
 त्वा२

१६ त्रिपुमर्दिनीहूंहुंसदात्रक्तनक्त्यांमोहंमःमृश्रहननमःस्वा
 हागीउगवचउदव्येपापू॥ ३॥ वलि॥ यानिमूडांदर्गयन॥ ॥
 धनपत्रिवात्रपूजा॥ अंजात्रउचअयेपापू॥ ४॥ हूंहूंपुचउ
 येपापू॥ उउचउअयेपापू॥ अंजुचउनायिकोयेपापू॥
 ॥ ६६॥ चउअयेपापू॥ ॥ ७७॥ चउवयेपापू॥ ॥ ८८॥ चउत्रपाये
 पापू॥ ॥ ९९॥ अंजुः अतिचलिकायेपापू॥ ॥ १००॥ वलि॥ मूडा॥ यम

विगुल गङ्गि गङ्गका लङ्का का प्रख ड्र म डोंद गङ्ग न ॥ वि न्य
०० ति उ य च अ पूजा ॥ ॥ थन का श्या यनी पूजा ॥ न्या स ॥ जे
की सः हृदयादि ॥ ज्ञासन पूजा ॥ जि जा धा नादि ८ ॥ जे य श्या सना
य पा पूजा ॥ जे सि हा सना य पा पूजा ॥ जे मे दि वा सना य पा पूजा ॥
॥ न ॥ का श्या यनी महा द वी ह म ग्या मां ग नू पि नी ॥ सर्वा लं का न
॥ ग्रा हा च पी ना न्न त प था ध ना ॥ काला ह लि त म ध्य स्था का धे र्द

लि त वि गृ हा ॥ द्वा द (गे ना उ जा द वी वा म द र्द च धा नि नी ॥ ख ड्र
वा र्ण त थ ग किं वि गृ लं च क द दि (ग ॥ रु लं ध न्वं क र्ग पा र्ग क र्ग
नं वा म क क न ॥ सि हा सन स मा नू र्ण म दि वा म रु य लि नी ॥ गृ लं
क र्ग च धा ना नि का धे गृ पु नि धा ति नी ॥ ध्या य मा ना स दा द वी स
र्व ग र्ग र्ग य क र्ग ॥ उ या या द व ना वृ क्का का श्या यनी न मा मु त ॥
ध्या न य र्ग पा पूजा ॥ ज्ञा वा ह ना दि त य ॥ ॥ र्ग उ लि ॥ कं डी सः

श्रीमहादेवचरितिकायाय नमो वा पूजा ॥ ३ ॥ बलि ॥ यानि मूडा ॥ ॥
 धनपत्रिवात्रपूजा ॥ क्रांजयायेवापूजा ॥ क्रांविजयायेवापूजा ॥
 स्म्रांजितायेवापू ॥ ॥ ल्मांजयनाये जिनायेवापूजा ॥
 ॥ स्म्रांजंरुनयेवापूजा ॥ स्म्रां ॥ स्म्रांरुनयेवापूजा ॥ व्मांमाहने
 वापू ॥ ॥ स्म्रांजाकर्ययेवापूजा ॥ ॥ ववलि ॥ ॥ स्वस्व
 मूडा ॥ विन्द ॥ ॥ ॥ तिकायायनोपूजा ॥ ॥ धनउन्वय

२० श्रीपूजा ॥ उगां हृदयादिषु उंगन्यासः ॥ आसनपूजा ॥ उगाधारा
 दि ॥ उगां यस्मासनायवापूजा ॥ उगां सिंहासनायवापूजा ॥ उगां महिषा
 सनायवापूजा ॥ ॥ ध्यान ॥ रुम्भयत्रीमहादेवी नमामि त्रिषु घा
 तिनी ॥ दाहिमीपुष्पसंकाशं हात्रमालावलं विनी ॥ अष्टादशो
 जाकाकापीनवक्रसुनीवहा ॥ खड्गं गकि नथावाणमं कं गमुद्र
 नागिच ॥ वज्रं चैव गलाकां च चक्रं गूलं च दक्षिण ॥ रुद्रकं चैव

29

गभीरं तर्जनीं दर्पणं धृजं ॥ उमरं लंगुलं काशं धनं अक्षमं क
कत्र ॥ सिंहासनं गतादवीप्याली रुस्थि तं श्वरी ॥ महामहिष
मात्रं दद्यात्पादं नयति जी ॥ गूलं नमहिषा तं वकुमं (ध्व) न (थे
वच ॥ काधनृपा वनात्री च द्वाला नृपस्थि तं श्वरी ॥ बलाप्यामा
रु वृक्षं च पूजनीयं श्वरी ॥ अयं मानासदाद (ग) नमामि सर्वद
तां ॥ अथ पूज्या पूजा ॥ आवाहनादि तय ॥ ॥ अंजलि ॥ शु

ॐ

22

रगवती च लुकाया यनी रुच्य श्वर्ये पा पूजा ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ अथ
पतिवात पूजा ॥ अंबलाप्ये पा पूजा ॥ कं माह श्वर्ये पा पूजा ॥ चं को
मार्ये पा पूजा ॥ टं वे क्ये पा पूजा ॥ तं वा नाह्ये पा पूजा ॥ यं ॐ न्द्राह्ये पा
पूजा ॥ यं चाम् अथे पा पूजा ॥ गं मं हाल श्वे पा पूजा ॥ वलि ॥ स्वस्वम
दा ॥ विंद ॥ ॥ ॐ ति रुच्य श्वरी पूजा ॥ ॥ अथ नचक्रयादवनापू
जा ॥ चक्राग्याहीमान ॥ कां की कूंकः शं गपालाय पा पूजा ॥ वाय

23

28



24

25

वायेपाद॥ उवंदलि॥ मडा॥ तिमिखायानिस्तुलमडा॥ विंदा॥
 ॐ तिसिद्धिलक्ष्मीपूजा॥ ॥ ॥ स्थापननवमीचालनधस्त
 क्रतुगुणसकलगुरुसगुणपूजायाय॥ ॥ धनकलग
 पूजा॥ उरुसः हृदयादिन्यासा॥ आसनपूजा॥ उजाधनादि८॥ उव
 वासनयपापूजा॥ उसिंहासनयपापूजा॥ ॥ ध्यान॥ चन्द्रकारि
 पतागउग्रुडाईकृतगखनः॥ उकास्यलावनगीनिविगुदा

हानदामध॥ उत्संगसामहालक्ष्मीधर्मांगलावनयया॥ मय
 उयसमालाववनदाहयगखध॥ दयाः कलुगन्दसंधुश्रीगु
 लार्कगकिषयसः॥ नानाहवनगमाहाद्यहानयूनमणिर्ग॥ च
 दयात्मावसम्पूर्णसंस्थितापनमधुनी॥ ध्यानपूर्वपापूजा॥
 आवहननादिनय॥ ॥ गंजलि॥ उजं ह्वांकलवृद्धमहासेन
 सम्प्राहनसकलतीर्थमरुदवनाकलाधु तत्वाधिपनयधु

25

20

22

38

३५

लहेनवायस्वुं उं उं नूड नीड तयानकाननायसकलगक
 नागकायपापू॥ वलि॥ ॥ यनहनुकादिवलिपूजा॥ उं कं खं
 गघं दं पूर्वपी अधिकात्रहनुकमहाहं यस्वगकि सहितायस
 गगपनिवात्रायपापू॥ वलि॥ उं उं उं म उं उं आ (नयपी अधि
 कात्रिपूनाककमहाहं नवायस्वगकि सहितायसगगपनि
 वात्रायपापू॥ वलि॥ ट ० उं उं नयाम्यपी अधिकात्रजुनिवना

३६

लमहाहं नवायस्वगकि सहितायसगगपनिवात्रायपापू॥ व
 लि॥ तथं दं धं नं नैर्जुन्यपी अधिकात्रजुनिजिज्ञामहाहं नवाय
 स्वगकि सहितायसगगपनिवात्रायपापू॥ वलि॥ यं रुं वं तं मं
 वात्रुन्यपी अधिकात्रकालाहमहाहं नवायस्वगकि सहिताय
 सगगपनिवात्रायपापू॥ वलि॥ येनं लं वं वायव्यपी अधिकात्र
 कापालीगमहाहं नवायस्वगकि सहितायसगगपनिवात्रायपापू॥

वलि॥ गंघासंहं उरुनपी अधिकात्र उक पादमहा तेन वाय स्वगकि
 सहिताय सगणपति वा नाय पापू॥ वलि॥ इहं गीमनपी अधि
 कात्र सीमनूपमहा तेन वाय स्वगकि सहिताय सगणपति वा नाय
 पापू॥ वलि॥ अं अंधः पी अधिकात्र हाट कमहा तेन वाय स्वग
 कि सहिताय सगणपति वा नाय पापू॥ वलि॥ उं उइ पी अधिका
 त्र अचलमहा तेन वाय स्वगकि सहिताय सगणपति वा नाय पापू

॥ वलि॥ स्वप्न मूडा॥ विंद॥ ॥ नमि महा काल वलि पूजा॥ ॥
 धनदवीया स्ववमक्षु गपाल वलि पूजा॥ कौहं दयादिष उं ग न्या
 म॥ आसन पूजा॥ त्रिनत्रासनाय पापू॥ ॥ ध्यान॥ मणुमाला धनं
 दर्वस्वप्न स्वप्न ग कायकं॥ उग्रनूपमहा दर्वरुट कं कन (ग) ति
 नं॥ काटि विष्णुसमपक्षु गिन नं नो दनृ पिर्ण॥ कृगपालमहं व न
 सर्वस्थान निवासिनं॥ ध्यान पूर्व्या पापू॥ आवाहननादि नय॥ ॥

[illegible]

यनिकुं गाय उन्मरु तेन वाय तं वा नादी ग कि सहिताय पा पूज ॥ व
लि ॥ अं उं च निरुं गाय कपाल तेन वाय यं ॐ डा जी ग कि सहि
ताय पा पूज ॥ वलि ॥ अं उं कामू क रु गी ती ष ग तेन वाय यं वा म गु
ग कि सहिताय पा पूज ॥ वलि ॥ अं जूः दं वी का ट रु गाय संहान ते
न वाय गं मेहा ल स्त्री ग कि सहिताय पा पूज ॥ वलि ॥ दं गु म डा वि
द ॥ ॥ ॐ निरुं वलि पूजा ॥ ॥ धन द वी या ख व स वा न गु व

४१
लिपूजा॥ वां हृदयादिषु ठं ग्यासुः॥ आसनपूजा॥ त्रं य ना स ना य पा
पूजा॥ ॥ ध्यानं॥ ध्यातृपूजाति त्रो डा च च उ त्र पा ति च लि क्ता॥ दं द
क नाल व द ना य त स्या प त्रि सं स्थि ता॥ नि मं सं काल ना नी म उ म
ला वि रु षि ता॥ स्वप्न रु ट क ध ना द वी ठ म त्र स्व द्वां ग धा त्रिं गी॥ क
रुं क पाल रु क्ता च विं द पा उ ध ना त था॥ व र्वा ना पिं ग क ग्ना च पिं
ग रु पिं ग ला च ना॥ स र्वा त न ग रु षां गी हा ना त न ग रु षि ता॥ इ उ

४२
क गी वि त्र या च वा म अ प त्र म ग्नी॥ ध्यान प र्वा पा पू ज॥ आ वा रु
ना दि त य॥ ॥ अं ज लि॥ त्रं द्रु सि दि चा म अ ये पा पू ज॥ ३॥ व
लि॥ त्रं ज नं डीं अं ठि या न जाला रुं ध न प र्वा गि त्री का म त्र प पी ०
य पा पू ज॥ ॥ प त्रि वा न पू ज॥ त्रं त्र द च अ ये पा पू ज॥ त्रं य च उ
ये पा पू ज॥ त्रं च उ अ य म ये पा पू ज॥ त्रं च उ ना यि का ये पा पू ज॥ त्रं च उ
ये पा पू ज॥ त्रं च उ व र्वा ये पा पू ज॥ त्रं ज ति च लि का ये पा पू ज॥ त्रं ज य

४३

ये पाप ॥ त्रं विजया ये पाप ॥ त्रं अति ना ये पाप ॥ त्रं जय ना जिना
 ये पाप ॥ त्रं ऊरु ये पाप ॥ त्रं रुं त ये पाप ॥ त्रं माद न्ये पाप ॥
 त्रं आ क र्थ ये पाप ॥ त्रं वे स्या ये पाप ॥ त्रं माद र्थ ये पाप ॥ त्रं को
 मार्ये पाप ॥ त्रं वे क ये पाप ॥ त्रं वा ना ये पाप ॥ त्रं ॐ द्यो ये पा
 पू ॥ त्रं वा म गु ये पाप ॥ त्रं म दाल ये पाप ॥ अननवलि ॥
 थानिमूडा ॥ विन्द ॥ ॥ ॐ ति याम गु वलि पूजा ॥ ॥ ॥

४४

स्थापननवमी चालन थ स्व दूत स ना दा प जा द सा द का मा य ॥ ॥
 रुट सि पू जा ॥ त्रं डां डीं रुं ड्रां कृष्णां उ दे शाय नमः पाप ॥ ३ ॥ व
 लि ॥ थानिमूडा ॥ विन्द ॥ ॥ थ न दू व म म्बाल ॥ ७ ॥ ७ ॥
 थ न वलि मूल ॥ थ व माल का ॥ ॥ थ न स म य वलि वि य ॥ त्रं ज
 सर्व पी ॥ भ प पी ॥ भ नि द्वा ना प द्वा न म व च ॥ रुं शा प रुं रुं सी दा रुं स
 र्वा दि ग्ता ग मं स्थि ताः ॥ या गि नी या ग वी न दाः सर्व न रु स मा ग नाः ॥

४५

ॐ दंपर्वमहाचक्रणीनां वावतदामम॥ यत क्वाः सासनदवीगु
त्रषादावर्तननाः॥ सर्वसिद्धिप्रसादापदवीनर्षातवत्सदा॥ वी
नाभांगिनीनां चयद्विषक्तिमदीगल॥ न न गानकवलिन्यविस
मयावातमलक॥ गतिः स्मृतिमनः पृथिर्मसिमयास्थिजीविर्न
॥ निष्कृत्य सुदृष्टानां गानिनीगणसंकलाः॥ कडुकादिकस्य प्रा
निर्निमिक्तान्ताविता॥ उक्तावादिष्यपीभक्तमः गालाः प्रकी

४६

मि२

क्तिमाः॥ जीषधीध्वानुसन्दाहादभासुविदभासच॥ महीपातालव
सा॥ सर्वस्थानाकत्रपूव॥ यागिनीयागयकात्मासम्यगिहक्तिमा
धकाः॥ वीनकर्मसूवीनन्दाः सत्यगिहक्तिदवगाः॥ सिद्धाश्च पूरुः
काचार्याः साधकाः क्षितिमायिनः॥ नगत्रवाथयामवाभूतव्यावा
सुद्वेन॥ वापीकूपेकवृक्षवाग्मगनमाहमगुल॥ नानाद्रूपध्वनान्य
पिपटजाविधानिच॥ नचसर्वविषयसंशुद्धावलिगुणसर्वतः

४७
गत्रगागताय ह कर्षां सर्वमनस्तुलपदी॥ बालञ्जय नमो कर्मय
रुत्रिष्यामि यत्नं॥ वलिपूष्यपदाननस्तुष्टाममचिनि काः॥
सर्वकर्मागि सिद्धं सर्वदायाः पुमास्तुम॥ गिवगकि पसादाभक
कात्राष्टनमाम्यदी॥ ॥ ॐ तिसमयवलिः॥ ॥ उमसमसमं रपी
॥ ॐ ति॥ उं उकात्रक ति॥ थन वलि विधि॥ ॥ थन दवया नमान
यावक॥ उं गं गशा सलिलं ॥ ॥ उं नानायापपत्रगनं॥ पूतस्तुत्याप

४८
यूकानां स्त्रानार्थं वपरोक्तगां॥ ॥ वन्दन॥ उं ॐ दमलसंरुनी
चन्दनं हिमगीतलं॥ वीनजाकु गचिद्रुतद्रुहागममसिद्धय॥ ॥
सिन्दन॥ पूर्णवन्दनक रम्यलोकुनी वीनरु चितं॥ गृहाण वीनवी
प्रगि सिद्धं नैवर्गदायकं॥ ॥ जइत॥ अरुनी सर्ववीनगवीन
ताववत्रपदी॥ सर्वमंगलदातृ सर्वगृहाण पत्रमभ्यत्रि॥ ॥ स्त्रान
॥ नानापूष्यसग धानि मालयाक सुमादयः॥ सीताग्यसिद्धिदं रड

पृष्ठात्राह गमरुमं ॥ ॥ धूप ॥ जगुत्रगुगुलु ॥ व कर्षनामृग
नातिकः ॥ धूपवासश्च सर्वर्षाधूपार्थपतिगृह्यमां ॥ ॥ दीप ॥ धूप
कागपदन्दीर्घं सर्वतस्मिन्मित्रापदं ॥ सवाद्यात्यन्तं नानिदीर्घार्थ
पतिगृह्यमां ॥ ॥ समयनेवज ॥ अन्तमहानसन्निध्यत्रमेवधिः
समन्तिनं ॥ मयासमर्पितं रुद्रं गृहाणपत्रमध्वनि ॥ ॥ शिसारु
नदका ॥ रुला रुलादिनाम्बलः ॥ रु कलादि सर्वतः ॥ ज्ञानदा

वज्राम्बीनः रुला र्थपतिगृह्यमां ॥ ॥ अचमनत्रय ॥ नायहाल
॥ यावद्वातात्कत्रस्यपुत्रवन्ति रुवनायावदाकागर्गमायावद्वाता
गन्धमागगनगणपतिर्गणपतिर्वाग्लेभः ॥ यावद्वातायिनाकीद
त्रिकमलजलवदसिद्धाकपाणीतवत्त्वं पूजयेत् ॥ स्वजनपति
वृतांवर्द्धतां वाञ्छलम् ॥ ॥ सपुनिस्यावत्रदातुं ॥ ॥ जपयाय ॥
थवमालकाथन ॥ ॥ विभेषजप ॥ उद्गुं स्वाहा ॥ उग्रचक्राय ॥

ॐ जीमः स्वाहा ॥ कात्यायनीया ॥ ॐ शुक्ल स्वाहा ॥ रुद्र ध्वनीया ॥ ॐ जी
 रुद्रांशुं शोकां नमः ॥ सिद्धि लक्ष्मी ॥ या ॥ ॐ शतः स्वाहा ॥ कलगा
 ॐ शुक्ल स्वाहा ॥ कृता ॥ शुक्लं शुक्लं नमः स्वाहा ॥ महाकाल ॥ ॐ शा
 स्वाहा ॥ कृता ॥ ॐ शुक्ल स्वाहा ॥ वामदेव ॥ ॥ सगुण आदि सप्त
 नया यदकांक्षी ॥ ॥ रुद्र नमः उपसर्ग मया य ॥ ॐ गुह्यातिगुह्य
 ॥ अफुल्लं गृहाणा स्मत्कर्म उपर्य ॥ सिद्धि र्त्तवगुमदवित्यस्य सादान्म

सिद्धि म ॥ उपसर्ग पाप ॥ ॥ थनमः गुलका गयाय ॥ ॐ अखण्ड
 मण्डलाकात्रि ॥ ॥ शिदवया ॥ रुद्र गं वद कर्म च ग ॥ गं विघ्न
 घातकी ॥ संपूय विधिवरु क्खानमा मिच शिदेवर्त ॥ ॥ नवात्मा
 ॥ ॐ कात्रा सनमात्रं वरु पत्रा पत्रिस्थिती ॥ घट्टकात्रगर्तद्वी
 श्री कृष्ण कानमा म्यदं ॥ ॥ उग्रचण्ड ॥ मादवी मधू केट त्रयमथ
 नीया चण्ड मण्डिनी यामाता महिषासूत्र रुय करी यात्र कवीजा

५३

गुणा।।यासागुननिगुनदेसददनीयादवदवाकिनीसादवीमम
 त्रैदसिगउउंनरुसदाचलिक॥ ॥गगया॥वर्णुं।।लाचनाना
 जत्रगतननिताकृष्णनीलारिमाताधुमाताहमवर्णसूटिकम
 निनिताचाष्टयस्थितासा॥पूर्वाद्यात्रदचउमृगुदगसुउजा
 खप्रमायायुधानादोदोयीभरुनाथजिनिदलमथनीपागुमाम
 सचली॥ ॥कायायनी॥यीताकायायनीसादनिमहिषसम

५४

सुचपायंशिनीतस्वप्रम्वगञ्जगकिन्दितनयजयीमूलचर्क
 सकाशं॥रुद्रप्रपंशृणीमेत्ववगुदधनुवेपागकोभयविन्दं
 लनेवात्रिकरुसुत्रमहिषनिपाघातिनीसुगयाक्री॥ ॥गगया॥
 दवीउयायाविजयाजिताख्यायनाजिताऊंरनिकातयेव॥यासं
 हिनीमाहिनिकागुदवीयाकर्षणीतामदमाप्रवतु॥ ॥रुद्रप्र
 नी॥त्रकाशीरुम्वत्रगीरुनिमहिषसमाकाकिनीमूलघातीवार

५५
स्याथ धूम्रं च त्वसि पिसु कनेः गकि वा रंगुर्गि च ॥ दक्ष मोक्ष
वर्जधननिगु रगनाका च मूलं सचकं वा मरुटं सृषा मंद नजक
लहना चाप स रुर्जनीया ॥ ॥ गगया ॥ कासी पो म रु नू पी व ड
वि वि ध क ला त्री द चि ना च त्री डी की मा त्री की र्ति का मा पिव तु म ध
म र्ज वे कू वी गाय मा ना ॥ वा ना दी वा द य नी प द न न प द द न न य मा
ना न (थ) डी चाम् गु अ चा प ल श्री रु न ग ग स हि ना मा न ना वः पु न रु ॥

५६
सिद्धिलक्ष्मी ॥ उत्कृष्टा म्वज कर्णिका पत्रि गता श्री सिद्धिलक्ष्मी पत्रा
कर्पूत रुटि क न्य क न्य ध व ली निः (ग) व पा पा प हा ॥ स सा ना र्ण व दः
ख र्प क उ रु नी निः क म्प नो सर्व द शी म र्त्य च म र्वा म्व जा द ग उ जा
थ न स्थि ता या रु वः ॥ ॥ स्था प न न व मी चा न न या वि (ग) व ॥ क ल
ग ॥ न लो ष धी स क ल नी र्थ उ ल न पु र्ण स्व रु य प ल व स (ग) रि न
पू ष्य माली ॥ अ रु ष या ग वि ष थ म्नि ति ष ग र्ण न क रु म्नि गि व

गकिमंनमामि॥ ॥कं॥लासासिन्दुवर्धुवदसुमनिसा
वकवकात्रिभगासाष्टादग्धाउउनीअसिरुलकधनाविंदकापा
लरुसा॥सिंदस्थाभीममगासकलजयप्रदासर्वसिद्धाककारी
५) ॥लाव्यपूजनीयासकलतयहनीदुहुदयेनमस॥ ॥सग
॥जगुस्थामावलियासाहनमांशुविहीषणः॥रूपःपत्रसना
मशुमाकलुयापितनमः॥धनंविगेषस्वरूपा॥ ॥ ॥महा

काल॥रुक्मस्थलांगवर्धुपृथगतजयनयेकवकुलिभगंराना
५८) नुआदिहयंतवहिकलतनर्गनगवदाकवकिं॥पिंगाईपिंग
कर्मदालनमिवसमाधानदंष्ट्राकनालंसायन्विद्येकनाथंविप
उनरुमरुकालद्वेनमामि॥ ॥कं॥रुक्मगाभामाधिपर्यसल
उगदिदंतेनवाविश्वकर्माप्रतस्थपिंगवर्धुउटमूकटधनंन
उवडाकवकिं॥वसन्कंकालगुउत्तवहिकलतनर्गवाष्टरुसंध

नमो खड्गो गंग खड्ग रुं ठ मत्र क सहि नं रु ग पालन नमामि ॥ ॥
 याम ॥ यामू अ च गु नृ पा य क टि न व द न धा न दं द्रु क नाली
 श्री डी निर्मा स द हा द लिन गि खि गि खा काल क गी छि न गी ॥ दे श्या
 नां मू उ माला रु जि ग न म गि ति धा नू ति हू वि तां गी ख द्वां ग अ य
 ह स्ता गु स गु म म त्रि पू न च र्दि ना य न र्दं स्था ॥ ॥ थ न म दा मा या
 वा न ॥ श्री स म्ब र्त्ति ॥ अ स्म न् ख ड्ग मि द्धि उ य का म नार्थ या ना य

गजवस्थापनयथागमविधीउग्रचण्डादयश्चनविधिरुसर्ववि
 धिपनिपूर्वमस्तु॥कनन॥कृताञ्जलिमस्कात्र॥॥शुभास्तु
 त्रिमास॥उक्तिष्टमलमृगादिश्रानककूटसस्तुगन्॥अकनीद
 र्गनिंवापिशुभ्यतांजगद्विक॥कदाचित्स्वप्नसंभुक्तस्वप्नवाय
 दिमेथर्न॥दकलग्नकथादविशुभ्यतांजगद्विक॥दिविवाञ्ज
 विवामनास्तुवासाननकवाननकाकपुकार्म॥अवधीनितसान

६९

दात्रविश्वेद्यत्रलोतममसापिचिकुशामि॥रुमोस्वलिगपादानां
 रुमित्रवावल्लवन॥त्ययिजातायत्राधनांत्वमवगतर्गगिव॥रु
 मस्वयेद्यत्रिमसायत्राधममीवदृष्टनद्वत्तनात्र॥मृयेवसर्व
 कथितंस्मृतंश्रद्धयाकृतंर्ध्वद्वत्तगदिनीति॥कमलमसावाजा
 त्वकानान्यागतिर्मम॥अकृष्णप्रगल्भानांइत्येतन्ममश्रुति
 अपत्राधसहस्राणिद्विचयनदनिर्गमया॥दाशायनिनिर्गमया

६२

कमलपत्रममयात्र॥आवाहननजानामित्रजानामिविचर्जन॥
 यज्जात्रेवनजानामिदमस्वयनममश्रुति॥पापार्हपापकर्मदिपा
 पासापापममूर्त्तं॥आदिमान्दवद्वत्तगित्वमवगतर्गमम॥अ
 न्यत्रगतर्गनास्तिस्वमवगतर्गमम॥तस्मात्कात्रुष्यतावननरु
 मांजगदीश्वरि॥मरुहानंदिमादीनंरुकिरीनरुथेवच॥तत्रा
 रुसर्वसम्पूर्णंरुम्यमांजगदीश्वरि॥यदरुत्रयनिउष्टमायादी



नचमरुवत्॥ तत्सर्वमपनाध्वचक्रम्यमां पिबुषामि॥ अथ वा
 लपुहानां कवचं तव तु वा नर्गं॥ तत्तु देवविद्या तानां भक्तिर्न वतु
 वा नर्गं॥ नमस्का नयाय॥ विन्दु विम॥ ॥ दक्षिणाय॥ न्यूनाधिक
 मिदं कर्म यदिच्छिदमच्छिदकं॥ कुरु संपूर्णं सर्वदक्षिणाय
 लोकां॥ अतस्तु कासांगमा सिद्धार्थं गीतुं वत्तु दद्यात्तु न सिद्धार्थं
 यथा गृहा दक्षिणं तु सप्तमं संप्रदद॥ कुरु॥ अथ गृहा र्वन वि

६४
 कृतसर्वविषयनिपुणमम् ॥ ॥ धनदवासीर्वादि ॥ वाचनकाय
 ॥ अस्मत्स्वप्नसिद्धिउपकारार्थपात्राय गयवस्थानउग्रचण्ड
 दयवर्चनसम्पुर्णार्थजृतिषकसुमहर्षमम् ॥ लखनथमहाय
 विधनतिया ॥ ज्ञात्वागीर्वादिस्नाननक्षय ॥ ॥ धनसमयगुहिका
 यावतर्पणयाय ॥ उषीमिंयमासनस्थवतयद्वन ॥ ॥ तैत्रकासर्ग
 मूर्तिप्रणीचणीगनाथः प्रगतिरुगिरुगालाकपालाः रुणीत्याः ॥

६५
 नकायकासिद्ध्याः पितृगणसहितामागतः कुरुपालायागिन्ध्याया
 गयकास्थलउलखवनाः यानमनस्विवन्दु ॥ पितृदवताः सर्व
 सत्रडाश्रविनायकाः ॥ यागिनीकुरुपालाद्यममददव्यवस्थिता ॥
 वाक्य ॥ विन्दुविद्य ॥ स्त्रीकानयाय ॥ ॥ न्यासलिकाय ॥ वलिथाय
 मतव ॥ ॥ सूर्यसाक्षी ॥ अस्मत्स्वप्नसिद्धिउपकारार्थपात्राय
 गयवस्थापनउग्रचण्डादयवर्चनसम्पुर्णार्थद्वनकर्मगिस्तान्नि

५६ श्रीसूर्याष्टाधनमः॥ पूष्यनमः॥ ॥ इति यवस्थापनउग्रवृक्ष
द्वयार्चनविधिः॥ ॥ ॥ गुरुनमस्कृत्यादितिगिवम्॥ ० ॥ ० ॥
नितालविननासमनवियरुयाथेपूजायानाव॥ ॥ सक्तिकर्क
निस्यंदगुलियाय॥ ॥ यनवलिसवजिह्वायानन॥ चिथम्मा
नखलमीर्थभाधनयानाव॥ ॥ सूर्याष्टाष्टवाक्॥ जस्मत्त्व
इसिद्धिउयकामनार्थयथागकिगीउग्रवृक्षद्वयार्चननिमित्त

५७ र्थकर्तुंश्रीसूर्याष्टाधनमः॥ पूष्यनमः॥ ॥ गुरुनमस्कृत्यादि॥ थ
वरुयाथेपूजायाम॥ धूपदीपनेवयच्छय॥ उपसारायाम॥ ॥
वलिकृकाथेयमनव॥ ॥ सूर्यसाक्षीतंधूनक॥ सफमीककृत
थथेयामरुल॥ ॥ सफमीककृयाविभाष॥ वलिसमनतया
ववल्लिथेयमाउ॥ पूजासकमानउर्थरुल॥ वलिथेयउक
मन॥ ॥ ॥ यनमहाहमीककृयाविभाष॥ स्थापनयापनिपा

मिहल॥ वंचिल॥ वृत्तानपन॥ न्यासमानावस्थितिलवाय॥ ॥
मालकापट्वासनयाय मायहाला॥ मालकावाय॥ ॥ न्यासयाना
वज्रललाधन॥ इयं धन॥ विथस्वानश्वल॥ ॥ वलाकूलनावः
स्थितहालवाय॥ ॥ ज्ञादि॥ यावच्चन्द्राकमात्रतामदी ज्ञानिज
लावदः॥ तावत्सुचिनेकालंचनः॥ स्थाप्यस्थितातव॥ स्थितात
वमहादवीदवातामनजाधिययावदगमीपर्यक्तं तावत्सुस्थि

नमाचनन॥ सर्वलक्ष्मीः प्रवृत्त्यर्थं सर्वगुरुकृपाययं च॥ ज्ञ
प्यादिदगम्यक्तं दूर्गद्वितनमास्तु न॥ ज्ञस्मत्तव ज्ञसिद्धिजयकाम
नार्थमहादमीपर्वणिदूर्गनाधनशीउगवशुद्धवीखजस्थापन
चलस्थाप्यस्थितातव॥ मायहाला॥ नमस्कातयाय॥ ॥ धनपू
जाआर्चनयाय॥ भातिय॥ न्यासयाय॥ सूर्यार्चयाय॥ वाक्छुत्थं
गुत्रनमस्कात्रादिआत्मपूजाकंधूनक॥ ॥ माहिनीकृया॥ सति

लसचंकननयिल॥**थ**जर्घपाश्यागुलिनहाय॥**उं**कः॥**ज**हायरु
ह॥**अ**वगुं०न॥**उं**कैकवचागड॥**भा**य॥**जो**नयगुमायवोषट्॥
लादाय॥**कः**॥**ज**हायरुह॥**रु**ह॥**३**॥**स**लीलयादथसजर्घपाशः
यागुलिनचाय॥**झ**॥**थ**यापिवनशिकागचाय॥**थ**जाखलन
आकलनहायकंचाय॥**झू**झूझूझूझूझूझूः॥ ॥**पू**हयिना
लयायमरुः॥**उं**ज**झू**

पिवन्नचिथखानजाकितयावदवधियकं॥**भा**धनयाय॥**यं**१०
न१०व१०॥**झू**झूझूझू१०॥**भा**रुनीरुय॥**ला**दाय॥**कः**॥**ज**हायरुह
॥**रु**ह॥**३**॥**थ**नमूडान्दगयन॥ ॥**थ**पूजायाय॥**उं**कै
भारुनीयापूजा॥**३**॥**व**लि॥**या**निमूडा॥**वि**न्द॥
थनमालिनीयान॥**पंच**वलिविज॥**द**वाहनादिक्तापाचास्यनका
पूजायाय॥**व**लि॥**रु**काथयमनव॥**सूर्य**साक्तीतंधनक॥ ॥**झू**नि

महाहृमीमायूजाविधिः॥ ॥ ॥ थनवमीशागपूजाविधि॥ ॥
 वलिमवजिह्वायानतनमालकाविथस्वानखल॥ ॥ सूर्यार्घ्य॥
 ज्ञायादि॥ वाक्॥ अस्मन्वद्वसिद्धिउपकामनार्थमहानवमीपर्व
 निग्रथागकिर्गीउगुचुदवार्चननिमित्तार्थकुरुंशीसूर्यार्घ्य
 नमः॥ पृष्पंनमः॥ ॥ गुन्मस्कात्रादिउपस्कारपयंधूनक ॥
 थनविधिपूजा॥ विधिलंखनहाय॥ कः अस्त्रायरुद्र॥ विथस्वान

[illegible]

लदयक॥ (धनवनन) (मलनय)॥ पगुवलिनपिय॥ उं३ः अस्तु
 यरु६॥ लंखनहाय॥ ३ः अस्तु यरु६॥ लादाय॥ ३ः अस्तु यरु६॥
 रु६॥ मालसथिमाव (मधनयाय)॥ अ१० वं १० वं १०॥ ३॥ ३॥
 १०॥ लादाय॥ ३ः अस्तु यरु६॥ रु६३॥ (धनमडा)॥ ॥ ३॥ ३॥
 पगुपूजा॥ उं३ः अस्तु यरु६॥ रु६३॥ (धनमडा)॥ ॥ ३॥ ३॥
 धूपदीपनेवयनक॥ ॥ पगुमरुकन॥ उवकसस॥ चिथखा

नजाकिलंखजा नाव॥ उं३ः पगुपा मयविषहविश्वकर्म (मधीमहि
 । तन्नाजीवपथादया॥ ॥ धनपगुसंकल्पयाय॥ उं३ः अस्तु यरु६॥
 वनाहकल्पति॥ वाक्॥ अस्तु यरु६॥ अस्तु यरु६॥ अस्तु यरु६॥
 मीपर्वलिगी उगुय उादये सां लयः सगमपत्रिवात्रय रुदं व
 क्रिदेव क्रिदेव तं सगवलिं घानपिय॥ मालन॥ ॥ दकिमास्तु
 य॥ पगुगृहादवमिष रुया उययार्थित॥ अस्तु यरु६॥ अस्तु यरु६॥

ॐ शिवाय नमः ॥ पूर्वजन्मकर्मपापपशुजन्मनजायत ॥ स
र्वपापविनिर्मुक्तस्वर्गलाकं सगच्छति ॥ ॥ मृदायक ॥ रागवि
य ॥ श्रीसन्धर्भति ॥ ॥ मृगुनीय ॥ मृगुसमनविन ॥ समयक
य ॥ ॥ यनघनृथानावकायवान ॥ रुतनरामायाधान ॥ ॥
कमामुनियय ॥ दक्षिणाकय ॥ कनन ॥ वाकनकय ॥ ॥ यन
दवागीर्वाद ॥ वाचनकाय ॥ श्रीत्मागीर्वाद ॥ श्रीकृष्णकायमभव ॥

ॐ शिवाय नमः ॥ वलिथानमभव ॥ ॥ श्रीचमन ॥ सूर्यसाक्षी ॥
था ॥ ॥ यनपिवनवकावकोमात्रीपूजायाय ॥ ॥ अयादि ॥
जस्मस्वप्नसिद्धिजयकामनार्थमरुतनवमीपर्वणि ॥ गवलि
मरुतनीउगचन ॥ दयचनसिद्धार्थकोमात्रीपूजानिमित्तार्थक
र्तुशीसूर्यावाचनमः ॥ पृथ्वीनमः ॥ ॥ गुरुनमस्तुत्यासाय
वागपूजा ॥ श्रीसूर्यावाचनमः ॥ ॥ यनमालिनीधान ॥ पंचवल

विम॥ ॥ दव आवाहनादि धवमालकापजायाय॥ ॥ विम
षकोमारीयान्यास॥ वाहयमादिषुग॥ ॥ आसनपूजा॥ उं
आधनादि॥ उं मंयनासनायपापूजा॥ ॥ ध्यान॥ वन्द्यकात्रणम
कागानिष्ठादि समष्टता॥ सूर्यविम्बनितादवीष्णीवसुहसि
मानना॥ बालनृपीमहामायाकोमारीयस्त्रयचिनी॥ यकाचु
डजापापूष्णीलिङ्गकिं गुरुकं॥ यमनागमनिमोलिमकालका

र
त्रयिमा॥ मिश्रिवाउसमात्रुठाविघ्नान्नामिकात्रिणी॥ श्रीराग्य
सपदालक्ष्मीमायः पूरयगः शिरो॥ पूर्वकामध्वनीदवीसर्वव्या
पीमहध्वनी॥ आगकुरुस्थितायकुंलाक्षसृष्टिकात्रिणी॥
ध्यात्वादवीसदानामिकोमारीगुरुमंगली॥ ध्यानपूर्यपापूजा॥
आवाहनादिनय॥ ॥ अंउलि॥ उंउं वंउं उं मंउं उं कोउं उं कीं
महाकोमात्रिकाविघ्नपापूजा॥ ३॥ वलि॥ उंउं उंउं उं उं उं उं उं उं उं उं

[illegible]

स्यः पापूज॥ ॥ दवीयाजवसस्थितिलपूजा॥ श्रींकींकलपूजबद
 कमाथयपापूज॥ हूंमहाकालायपापूज॥ ननंदिनपापूज॥ ॥
 दवीयाखवसकाणिलपूजा॥ गंगंगपतयपापूज॥ कांकुगपाला
 यपापूज॥ हूंमहाकालायपापूज॥ ॥ दथसपूजा॥ कांकुगपाला
 यपापूज॥ हूंसिद्धिदामभयपापूज॥ चंकीमात्रिकाविष्णुपापूज
 ॥ जस्वस्थान हूंकंगपालायपापूज॥ वलि॥ यानिमूजा॥ विन्द॥ ॥

धनवलिमूल॥स्नानादि विधेस्तानखल॥धूपदीपत्रेयय॥सिसा
 रुलदकाकाय॥ ॥उपमाय॥धनमालका॥विगम॥उक्तांस्वा
 हा॥उपसमर्पणमाय॥ ॥मगुलका॥धनमालका॥ ॥
 विगमका॥हंमीपूर्याधिकारीति॥कोमारीमयनात्रुठनकीगी
 नकवाससी॥गक्यरविन्दमूडचगुह्यम्वनमामुत॥ ॥रुन
 सामहामायावान॥पीसंवर्क॥वाक्का॥जुगगन्धादि॥दक्षिणा॥

दवागीर्वाद॥वाकनकाय॥आत्मागीर्वाद॥ ॥संवृतिरुत॥ ॥
 न्यासलिकाय॥वलिआय॥सूर्यमाक्षी॥ ॥रूतिर्कोमारीपूजा
 ॥आगस्तगविद्यासपगुमानिलिकायमनव॥ ॥दगमीका
 द्रुकाकाय॥ ॥रूतिनवमीयाविधिरुल॥ ॥ ॥धनमहाद
 गमीकद्रुयानगयापूजायाय॥ ॥मालकासंवजिरुयानसाय
 ॥विधेस्तानखल॥मालका॥धनपूजाआत्रेयाय॥ ॥सूर्य

८४
ध्याय ॥ वाच ॥ अस्मत्स्वप्नसिद्धि उय काम नार्थ महाद गमी पर्व
शिख इमा जनिमिरु कपी उग्र च उद व्यर्चन निमिरु अर्थ कर्तुं शी
सू माया धनमः ॥ धर्ष्य नमः ॥ ॥ गुन्न नमस्का नादि उय फल न
धूनक ॥ स्थापन क दूया र्थ पूजा उर्थ कल ॥ दवदक्षि ॥ काय ॥
दवाभीर्वा दयाय ॥ ॥ वला कल नाव रुमा सुति माय ॥ नाय जा
कि आ नाव हा थ उल पं चा न ॥ उर्व दवी सर्व रु ना ना त्व गति स्वं

८५
पनाय नः ॥ त्वदा स्नापन म गानि त्वं दवी ग न र्ग म म ॥ यादि दव ग
नाः सर्व पूजा मादा य सा न दा ॥ ॐ हू काम यदा नाय पुन नाग म ना
य च ॥ दूर्ग द वि उ ग न्मा नः स्वस्थाने ग रु पूजिता ॥ सम्वत्स न यती
न ष पुन नाग म नाय च ॥ रुम स्व सर्व म काय निशान न्द क नाय
च ॥ धर्मार्थ काम माका र्थ पुन नाग म नाय च ॥ पूजा या व न म स्का
न माय ॥ ॥ दव रति स न क ॥ वाच न काय कल ग या ल्खन ॥



दर्शन॥ श्रीसम्बर्का॥ ॥ दम्भलवक्राय भक्ति या त॥ उज्ज्वल गभीरुव
न ध्वनी सनवनी संयम सिद्धि करी यदं सत्र विन्नने मनिगलेः
सम्पूजिताः सर्वदा॥ याती चम्पक कर्षिका तिकुजता पञ्चगता
माकृया नां दंवी सततं नमामि गिरि सा लम्बीः पुदया हली॥ ॥
दवसुक्ताय॥ सकल संविद्य॥ उज्ज्वल लोक नानन्दति॥ तर्पण
याय॥ उषीतिः युगासनस्थिति॥ स्वीकृतमाय॥ ॥ न्यासलिका

य॥ वलि (थाय) ॥ सूर्य साक्षी आय ॥ जू म्म ह्य द्र सिद्धि ज म का म नार्थ
म हा द ग मी पर्व लि ख द्र या ना नि मि रु क म थ ग कि णी उ य च गुा द
व्य र्च न स म्म गु र्थि क न क र्म नि सा क्षि (ग णी) स र्मा या र्च न न मः ॥ पू र्ण
न मः ॥ ॥ म र्द द का लि का य ॥ व लि व्या कं षा या व या क ल क्श य ॥
॥ ॥ मू ति द ग मी या वि धिः ॥ ॥ हा क नं पू जा या य मा ल द ग
मी कू कू ॥ थ व रु या (थ) ॥ द ग मी या ॥ ख द्र या ना रु न ॥ ॥ च का द

गीया॥ स्वप्नया शारुनप्रधानम् ॥ ॥ द्वादशीया॥ स्वप्नया शारुन
रुन॥ ॥ ॥ अथ चतुर्थी कर्म ॥ ॥ वलिसवति शायनशाय
॥ विथस्वानखल॥ ॥ न्यास॥ सूर्यार्घ्याय॥ अस्मत्स्वप्नसिद्धि
यकामनार्थमहादशमी स्वप्नया शारुनचतुर्थी कर्मणी उग्रगुद
द्यर्चननिमित्तार्थकुरुंती सूर्यायार्घ्यनिमः॥ पृथ्वी नमः॥ ॥ गुत्र
नमस्कात्रादि जपस्मृत्यं धनक॥ पूजानवनाखस्वनाक इत्यर्थ॥

दक्षिणाश्वयत्नवम् ॥ ॥ द्वादशीर्वाद्य॥ वाचनकाय॥ आत्माभी
र्वाद्य॥ विथस्वानकाय॥ ॥ समयनर्पणाय॥ स्वीकानपाय॥
॥ न्यासलिकाय॥ वलिधाय॥ ॥ सूर्यसाक्षीधाय॥ ॐ अस्मत्स्व
प्नसिद्धि जयकामनार्थमहादशमी स्वप्नया शारुनचतुर्थी क
र्मयथागदिकुंती उग्रगुदद्यर्चनसम्युक्तार्थकनकर्मणि सा
क्षिणी सूर्यायार्घ्यनिमः॥ पृथ्वी नमः॥ ॥ स्थितिलुलावदग

नवाय॥ ॥ (धसवानगुलि सिंदूरस्नानकाय॥ स्थितिलस्य न
क॥ वलिस्थानसवाय॥ ॥ छतिचतुर्थिकर्मविधिः॥ ॥
संवत् १८६४ साउपद कृष्णमास गीमा आदित्य वान॥ धकृ
शीमलीकृष्णशीमा आषाढाय जनकनाउ गर्भगन॥ कानि स
मायागवंशनावरुवावरुनिनाय गमा नवा स्थं विद्या कुल॥
धसकृलिसूनानेला रयायमदरुला॥ ॥ शुभकृष्णमास॥ ॥

ॐ नमः शीलश्रीदक्षीनमः॥ ॥ न्यासः॥ यः नृकाय रुद्र॥ ॐ जं
गुष्ठायां नः॥ श्रीं तर्जनीयां स्वाहा॥ श्रीं मध्यमायां वषट्॥ श्रीं जूनामि
कायां हुं॥ श्रीं कनिष्ठायां वीषट्॥ यः जूकाय रुद्र॥ ॥ श्रीं हृदयाय
नमः॥ श्रीं मित्रसं स्वाहा॥ श्रीं गिरवाये वषट्॥ श्रीं कवचाय हुं॥ श्रीं न
गुण्याय वीषट्॥ यः जूकाय रुद्र॥ ॥ आसनपूजा॥ ॐ आ धा न
मकृष्णाय पूज॥ जनकासनाय पा ॐ॥ कं आसनाय पा ॐ॥ नालासना

६४

मपापू॥ यथा सनायपापू॥ यथा सनायपापू॥ क० नासना
 यपापू॥ कर्त्तृकासनायपापू॥ श्री कमलासनायपापू॥ ॥
 ध्यानं॥ मागिबुपतिमपतादिमनि ते सुं जेयु तुतिगउ हस्माय
 हितनलकूमसलिलेनासिंचमानां सदा॥ हस्तावुर्वनदानमम्व
 ऊयगा तीतीन्दधनाहनः॥ काकाकांकि तपाविजा तलनिकां वं
 दसनांजासनां॥ श्रीलक्ष्मीदधेध्यानपथं पापू॥ ॥ जावाहनादि॥

६५

यंजलि॥ वं० श्रीं० श्रीं० श्रीलक्ष्मीदधेपापू॥ ३॥ वलि॥ आनिमडा॥ ॥
 अहं दयादिषठनपूजा॥ ॥ जावाहनादिआनिमडाकन॥ विन्दु
 ॥ ॥ लक्ष्मीमाउवसस्वामीपूजा॥ ॐ गत्रजसनायपापू॥ यंजलि
 ॥ ॐ नमो गवत वासुदेवाय नारायणाय पापू॥ ३॥ वलि॥ ॐ
 वक्रमडां दगंध॥ विन्दु॥ ॥ लक्ष्मीयाखवसकवत्रपूजा॥ ज
 यासनायपापू॥ यंजलि॥ ॐ सूक्तवनाय स्वगकिसहिनायः

पाप ॥ ३ ॥ वलि ॥ सां हृदयादि षडंग ॥ वलि ॥ गद्य मडा ॥ विंद ॥
 ॐ त्रिकुव न पूजा ॥ ॥ धन मगु न पूजा ॥ उडी शी सुं श्री म्मां जं व
 थामा य वृ चि नं जी वीत्यः पाप ॥ वलि ॥ (धन मडा ॥ विं ॥
 ५६ कियाल पूजा ॥ तुं स्वा हा जू रु मा ये पाप ॥ वलि ॥ यानि मडा
 विंद ॥ ॥ वा दाल पूजा ॥ ॐ धां धान्या नां धे पाप ॥ वलि ॥ या
 नि मडा ॥ विंद ॥ ॥ धन वलि मूल ॥ द व साना दि त य ॥ ध प दी प

५७ ने व घ क य ॥ ॥ लं ख रु ल न य ॥ गाय हा ल ॥ ॥ ऊ प या य ॥ ॐ
 श्री स्वा हा ॥ १०८ ॥ डी सः स्वा हा ॥ वि रु या ॥ ॥ क व न या ॥ स्तं क व ना य
 स्वा हा ॥ पू जा या ना द का सं मूल न या य ॥ ऊ प स म र्प न या य ॥ ॥ म गु
 ल रु ॥ मा सा प सा स न स्था पृ थू ल क टि त ती प य प जा य ता की गं ती
 ना व रु ना रि रु त त न न मि ना गु क व रु रु ती या ॥ ल रु दी द वी ग ऊ रु
 म गि ग न य चि मेः स्ना पि ता रु म क रु नि र्भं सा प म रु सा व स रु म म

गृह सर्वमांगल्ययुक्ता॥ गङ्गाकात्रं कुजगमय नं च यन्ना तं सूत्रं वि
ष्टाकात्रं गगनसदृशं भव वरुणं गुणं ॥ लक्ष्मीकात्रं कमलनयनं या
गतिर्दानगम्ये त्वन्द्यविष्णुं तव तय हनं सर्वलाके कनार्थं ॥ धनदाय
नमस्तुभ्यं त्रिधीनामधिपाय च ॥ तव रुत्वस्य सादन धनं धन्यादि स
पदं ॥ श्रीसम्बतं ॥ अस्मत्सकलसंपत्तिं समृद्धार्थं शीलं स्थाना
मावास्यापर्वणि शीलं श्रीदयार्चनं संपूर्णं ॥ अङ्गुगन्धयधूपदीपा

र्चनविधेः सविधिपत्रिपूरुमस्तु ॥ नमस्कात्रमाय ॥ विन्दु ॥ ॥
थनसकलपत्रिवात्रनं तावज्जुक्तस्वानजानावप्रार्थनायाय ॥ ॐ
नमस्तुभ्यं देवदेवि वनदासि हनिषिष्य ॥ गतिस्तुभ्यं मयुसनासि साम
ह्या त्वदर्थनाम ॥ नामहाल ॥ ॥ हानं हाथजपावधानं ॥ ॐ विष्णु
रूपस्य लार्थासि पप्रपलायगुत ॥ महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं सुखनामि
कृन्वन्म ॥ ॥ साष्टांगप्रणामः ॥ ॐ माता त्वं सर्वरुता नन्दवी त्वं सृष्टि

संतवा ॥ आख्याता ह न ल द वी सख नानि न मा रु त ॥ ॥ दक्षिणा रु
य ॥ न र्घ दया य ॥ ॥ अतिथ क काय ॥ च न्द ना गी र्घ द काय ॥ न्या स
लिका य ॥ भासि य ॥ सूर्य सा की था य ॥ ॐ अ स्म स क ल सं प रि स मृ द्य
र्थ गी ल स्म स्था ना मा वा स्या प र्व ति गी ल की द य र्च न स म्प र्ण र्थि क
न क र्म रि सा कि ॥ १ ॥ गी सूर्या या र्घ न मः ॥ पू र्ण न मः ॥ ॥ थ म य दा
ष काल स पू जा या ना व वां ध व म् ना व सूर्य न ता ऊ न या य ॥ ॥ ०

निल मी पू जा विधिः ॥ ॥ गुरु म्भू या न् ॥ ॥ गी ल स्म पु स त्रा रु ॥
ॐ न मः अ रि णि का ये ॥ ॥ अथ चतु र्द शि पू जा विधि लि ख्य ते ॥ आ व म न ॥
प्रा णा या म न्या स ॥ सूर्या अ र्घ ॥ अ श का श्य प गो त्रा स्म त श्री स्वेष्ट दे वा
सु प्र शं न द्वा रा चतु र्द शी दे वा र्च न नि मि त्प र्थ र्हो ह्रीं स श्री सूर्या य न मः
॥ गुरु न म स्का र ॥ न्या सा र्घ पा त्र पू जा ॥ भू त सु द्धि आ त्म पू जा ॥ पं च व
लि नि स्यं माल क पू जा या ॥ ॥ क्र म दे वा र्च न ॥ न्या स ॥ कि नि कि नि वि

१०२
चेकोङ्कणायै रु अस्त्राय फत् ॥ नमो भगवति हृत्कमलायै ह्रीं
अगुष्टाभ्या नमः ॥ ह्रीं कुङ्कुमायै कुलद्विपायै ह्रीं तज्जनीभ्यां
स्वाहा ॥ ह्रीं ह्रीं कुं वव्वरसि सेरु मध्यमाभ्यां वषट् ॥ घोर अ-
घोर अघोर मुखिवरु रूपायै हे अनामी काभ्यां हं ॥ छा छीं
महन्तारिकायै ह्रीं कनीष्टाभ्यां वोषट् ॥ किं नि किं नि विन्ने कोङ्क-
णायै अस्त्राय फट् ॥ ॥ नमो भगवति हृत्कमलायै ह्रीं उर्ध्व
क्रायै पादुकां पूजयामि ॥ ह्रीं कुङ्कुमायै कुलद्विपायै ह्रीं वव्व

१०३
क्रायै पादुकां पूजयामि ॥ ह्रीं ह्रीं कुं वव्वरसि सेरु दक्षिणावक्रायै पा-
दुप ॥ घोर अघोर अघोर मुखिवरु रूपायै हे उत्तरवक्राय-
पादुप ॥ छा छीं महन्तारिकायै ह्रीं पश्चीमेवक्रायै पादुप ॥ कि-
नि किं नि विन्ने कोङ्कणायै रु परापरवक्रायै पादुप ॥ नमो भगवति हृत्कमला-
यै ह्रीं हृदयाय नमः ॥ ह्रीं कुङ्कुमायै कुलद्विपायै ह्रीं सिरसे स्वाहा ॥ ह्रीं
ह्रीं कुं वव्वरशिखे रु शिखायै वोषट् ॥ घोर अघोर अघोर मुखिवरु

१०४

पायैरैकवचाय हुं॥ ह्रीं महं तारिकायै हौनेत्रत्रयायै वोषट्॥ कि
 निकिनि विद्धे कोट् रणायै रुः अस्त्राय फट्॥ आसना॥ आधारशक्तये न
 मः॥ अनंतासनाय नमः॥ स्कंदसनाय नमः॥ तालासनाय नमः॥ पद्मास
 नाय नमः॥ पद्मासनाय नमः॥ केशरासनाय नमः॥ कार्तिकासनाय नमः॥
 यद्रुमराडलाय पाः पू॥ यद्रुमराडलाय धिपतये ब्रह्मप्रेतासनाय पाः पू॥
 सूर्यमराडलाय पाः पू॥ सूर्यमराडलाय धिपतये विष्णुप्रेतासनाय पाः पू॥ अ

१०५

ग्नीमराडलाये पाः पू॥ अग्निमराडलाय धिपतये रुद्रप्रेतासनाय पाः पू॥
 ॥ सोममराडलाय पाः पू॥ सोममराडलाय धिपतये इश्वरप्रेतासनाय पाः पू॥
 ॥ शक्तिमराडलाये पाः पू॥ शक्तिमराडलाय धिपतये शक्तिशिवप्रेतासना
 य पाः पू॥ ॥ ध्यानं॥ ॥ नीलपञ्चामृतनौ नृत्यत द्विपर्यङ्कशः स्थितः॥ वि
 रष्टवर्षदेशीयोरत्नसर्पः स्थिर्वर्धितः॥ वंकिताभिसिताभाजैः कृताङ्गु
 रिति भैरवः॥ कदाचिन्नातव्या घ्रासुकां चिकटिस्तु हास्यवान्॥ विप्रछुल

पञ्च
 ध्येन
 दन
 कोनी
 काश

चक्रध्वजाशतचदक्षेवाकुभिः॥ पारिजातं जाप्यमाला पुरतः काभयक
करो॥ अन्यदाकुद्वयाभ्याश्च कश्मीवृत्तविग्रहं॥ देवावृतस्मशानेव स
देवसंस्थितो नवः॥ ॥ नीलाञ्जनसमप्रख्याकुञ्जिरूपामहोदरा॥ षड्
क्रादादसभृजा सख्यास्थिरत्नचर्चिता॥ मुराडमालाधारिणौ द्वीदृष्टाकराल
कानना॥ अष्टादशां वक्ता देवी वर्धरोर्ध शिरोरुहा॥ व्याघ्रवर्मपरिधा
ना सिंहवर्मोत्तरियका॥ दिव्याभरणाभूषाङ्गी अट्टाट्टाहास्यहाशिनी॥

तस्याः पीतं जलवक्त्रं उत्तरं रंषामसन्निभं॥ दक्षिणोक्तधवर्णाश्च यत्संमु
खा प्रदक्षितं॥ पूर्ववक्त्रं भवेद्रक्तमी सनत्स्फटिकोपमं॥ सहस्रसूर्यसंकाश
सूर्ध्ववक्त्रं परावर्जितं॥ सर्वदृष्टाकरालानिवेकां रणक्ता निभंभूता॥ अस्त्रा
ण्यस्याः प्रवक्षामि कुञ्जिकायां महतीति च॥ दक्षिणो व प्रयोगेण वामेवैव
विजानथ॥ त्रिशूलवक्त्रवज्राणि अङ्गुशंशरकर्तृको दक्षिणो वामतो द
शा त्रीलोटपल्लसतारकं॥ अन्यच्च मुराडखदाङ्ग घण्टा पुस्तधनुस्तथा॥

कपालवासकै प्रोक्त सिंहसनसवासना॥ क्रमदेवदेवी ध्यानपुष्पं पाप
५॥ ॥ त्रियांजलि॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं सोः ह्रीं ॥ आनन्दशक्तिभैरवानन्दविरा
धिपतये सै श्रीमहाविद्यारंजेश्वर ॥ अस्ताविशंति क्रमशिवसक्ति
सहिताय त्रीयांजलिपुष्पपाप ॥ ३॥ वालि॥ त्रीभूलनयोनिमूद्रां॥ विंछा
॥ मूलस्थानपूजनं॥ आसनं॥ आधारशक्तये नमः॥ अनन्तासनाय न
मः॥ स्कन्दासनाय नमः॥ नालासनाय नमः॥ पद्मासनाय नमः॥ पद्मासना

यनमः॥ केशरासनाय नमः॥ कर्णिकासनाय नमः॥ चन्द्रमण्डलाय पाप
॥ चन्द्रमण्डलाय धिपतये वृक्षप्रेतासनाय पाप ॥ सूर्यमण्डलाय पा
प ॥ सूर्यमण्डलाय धिपतये विष्णुप्रेतासनाय पाप ॥ अग्निमण्डलाय
पाप ॥ अग्निमण्डलाय धिपतये रुद्रप्रेतासनाय पाप ॥ सोममण्ड
लाय पाप ॥ सोममण्डलाय धिपतये इश्वरप्रेतासनाय पाप ॥ शक्तिम
ण्डलाय पाप ॥ शक्तिमण्डलाय धिपतये शंकरप्रेतासनाय पाप ॥

वृषासनाय पापपूष ॥ सिंहसनाय पाप ॥ ॥ ध्यात ॥ वृषभे संस्थितं दे
 वं स्ववर्गं रूपसोभितं ॥ एकवक्त्रं त्रीनेत्रं वाष्टादशभुजधारितं ॥ इमं
 परशुमं शरमं दुःसवग्रं कं ॥ शंखं च वैराट्वाद्यं च वरदं वरदक्षिणो ॥
 वामे स्रक्काङ्गभूलं च फलकं धनुपासकं ॥ घण्टाकपालनैवेणं च अभयं
 भयनाशकं ॥ पदेन वक्ष्यते नुर्ध्वामोहस्यावदेवती ॥ एकवक्त्रा त्रीनेत्राव
 अहं रागवर्गा वर्णिता ॥ द्विभुजा वरदा दक्षे सिंहस्याभयदा शुभा ॥

नानालंकारसंपूर्णलक्षणां सर्वसंयुतं ॥ भैरवानन्दरूपो यं जेष्ठानुजे
 ष्टप्रकृतिता एवं ध्यात्वा वरुणैरेक्षिप्रसिद्धं तिमानक ॥ मूलस्थान
 भक्ताकाय ध्यात पूषं पाप ॥ ॥ त्रियां जलि ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं हं ॥
 आनन्दशक्तिभैरवानन्दविराधिपतये सै ॥ श्रीमहाविश्वरजेश्वरी कु
 ष्ठिकेश्वर कुष्ठिकेश्वरी भट्टारकाय त्रियां जलि पूषं पाप ॥ ३ ॥ वालि ॥
 श्रीभुलं योनिमुद्रा ॥ विदुः ॥ ॥ यतसिद्धिस्तस्मिन् पूजा ॥ कलसं कुंभं स

११२

गुरा मोहनि पूजा ॥ वलि मोले ॥ समये वलि ॥ जप सोत्र ॥ ॥ उँका
 गङ्गुत्पपादो हं सक्षमलभुजो वोदरश्चाग्निलिंगं वायुव्याघ्रां जिताद्या
 शशिसकलकला विन्दुनादोर्ध्वजुता ॥ निर्मिङ्गनामुधारा नृप परमक
 लाभैरवो मन्त्रमूर्तिः पायादेवो नवात्मा सकलभयहरो भैरव श्रीकुजेशः
 ॥ खड्गन्वा मन्त्रसिद्धिपरपरविसनखे गतिं लोचनवा ॥ शस्त्रस्तम्भारिपूणी
 वलिपलितजयंस्तंभनै सर्वविद्या ॥ दिर्घायुष्यै कवित्वरसनिधिगुणिकां

११३

पाङ्ककां सिद्धिं सर्वविन्नादन्दनुअलिवलिपिशिताभैरवो नान्ययुक्ता ॥
 श्यामारकात्रिनेत्रास्तनभरणा मिता मन्त्रमातंगगामिविम्बोष्टी वारुनेत्रा
 पृथुतरजघनामेखलारत्नसोभा ॥ देवांगे वस्त्रशोभावरवरकुसुमेवर्वरा
 केशभारा ॥ सामेश्रीकुविकाख्या विदधंतु सततं ज्ञानदिव्योद्यमोद्यः ॥
 ध्याता ॥ ॥ सूयपृष्ठासनदेवं शुभांगं जेवक्रकं ॥ त्रिनेत्रं परशुलङ्कं मूलाद्यैवधा
 रणी ॥ नागयज्ञोपवितं च सर्वदुरितनाशनी ॥ एवं विद्मह रंध्यात्वा गगनाथं महात्मनः ॥

श्रीमैव उवाच ॥ जयत्वंमालिनीदेवी निर्मले मलनाशिनी ॥ ज्ञानशक्तिः प्रभुदेवि वृद्धिस्त्यते
 जवर्द्धिनि ॥ जननि सर्वभूतानां संसारे स्मिन् व्यवस्थिता ॥ माता वीरावती देविका ह्येयं कुरुवत्स
 ले ॥ जयति परमतत्वं निर्वाणसंभूति तैजोमयी निःसृता व्यक्त रूपा परा ज्ञानशक्तिस्त्वमिहा
 क्रिया मेगता क्रतुरेखा सुरेखा पुनस्तु न नागेन्द्रवत्कुंडलाकातरूपा प्रभुर्नादशक्तिस्तुंगी य
 से भासुग ज्योतिरूपा स्वरूपा शिवा ज्येष्ठानामा च वा मा च गौरी मनाक्षा म्बिका ॥ विन्दु रूपा
 धुताई चन्द्राकृतिस्तु त्रिकोणा ॥ अङ्गमकारं अकारं ऐंकारं स यो ज्यते ॥ तत्त्वमापद्यते तद्गू
 पास्वरूपा भगा कावस्थायिनी ॥ आदितः क्षान्तेतत्त्वोद्वायो निरूपा स्वरूपा च ॥ श्रीकण्ठ
 संमोहिनी ॥ रुद्रमाता तथानन्तशक्तिः समूक्षमात्रिमूर्त्यं मण्यी शानी सारभूती तिथी ॥

शास्त्रिका स्थाणु मृता हारणा व मिठी शमौ की शमद्यात्मिकानुग्रही शङ्करार्चिता ॥ त्वं महा
 सेन संभोगिनी खोड शान्ता मृता विन्दु सदोहिनी ॥ स्यन्ददेह युता शेषसम्यक्परा नन्दनि
 वाणा सौरव्य प्रदेमै रवी मैरवो आनकी शानुशक्ते परा मालिनी रुद्रमा एर्चिते रुद्रशक्तिः स्य
 गे सिद्धियोगेश्वरी सिद्धिमाता विभुः शब्द ए शीतियो नार्नवी वाग्मिभुद्रा सिवा सिद्धिवा गोश्वरी
 मातृका सित्यमिहा क्रिया मेगता सिद्धिलक्ष्मी विभुतिः संभूतिः सुभूतिर्गतिः शाश्वती रणा
 तिर्नागयणि रक्तचण्डाकणलेखना भीमरूपा महाधु व्यायोगप्रियोत्तमं जयत्याजिता ॥ रुद्र
 संमोहिनी ॥ त्वं नवात्मनन्ददेवस्य चोत्तंगपाना म्भृता मंत्रमार्गानुगैर्मोदिनि मातृमिथीः

रमानानुरक्तैः सुभक्तैश्च संपूज्य शोदे विपंचामृतैर्दिव्यपानोत्तमैर्मृगडकंकारकापालिनी
 एकजन्मद्विजन्मत्रिजन्मचतुःपञ्चसप्तसप्तजन्मोद्भवैः शान्भवैस्तैश्च नागैश्च भैः फ
 लुभिल्लपसेमदमांसप्रियेयोगविद्याव्रतोद्भूतभिर्मृगडकंकारकापालिकैः ॥ दिव्य
 चर्या नुरुद्धे मंत्रनमस्कारं कंकारकास्थायी कंकारकास्थायी कंकारकास्थायी कंकारकास्थायी
 तिभिरेतैश्च मंत्राक्षरैर्वाग्निमिवाप्तमहस्ते स्थिते ॥ अक्षसूत्रावलिर्जातिर्लोकैः पुत्रकै
 र्मातृभिर्मृगडकैः ॥ दीक्षितैर्योगिनीवृन्दमेतापकेरुद्रकीडाहसैः पुन्यसेयोगिनीयो
 गसिद्धिप्रदे देवित्वं पद्मपत्रोपमेतोचनैः स्नेहपूर्णसुसंपद्मैः ॥ तस्य दिव्यत
 रिक्षस्थिता ॥ सप्तपातालासंखेचरीसिद्धिरव्याहतावर्तते भक्तितोयः पठेदंशु

के ॥ एककालद्विकावत्रिकावचतुःपञ्चसप्तसप्तचाष्टौशुवि८ संस्मरद्युः सप्त
 मानवः सोपिबोहग्निराशस्त्रार्णवे पर्वताग्रे पितरक्षसे देवि पुत्रानुत्तमा महा
 तक्ष्मी प्रदे ॥ हेमचौहान्यदागुनशक्तिश्च ब्रह्मघ्नगोघ्न महादोषदुष्टाविमुक्त
 तिसंस्मृत्यदेवित्वदीयमुखं पूर्णचन्द्रानुकारं स्फुरदिव्यमागि सफुल्ललो
 घुत्तागण्डस्थिताम् ॥ अपि वद्रादृष्टे वंचनैर्नागपाशैर्भुजावध्यपादागतैस्तपि
 त्वं नाम संकीर्तनादेवि मुच्यन्ति चोह महाव्याधिभिः संस्मृत्य पादा विन्दयते
 ॥ माहात्मिकाताग्नितेजप्रभे ॥ त्वं दृगो विन्दुवृत्ते द्रव्यार्कप्रव्यायुधैर्नैति
 मातालि सत्यप्रकिजलपिंजरे सर्ववीर्यामिकैर्भैरवी भैरवस्तो शरणमं

तोहं क्षमस्वापरां क्षमस्वापरां शिवे ॥ सर्वस्तु त्वामहादेवी मैरवेणामहात्मना
 ततो लिंगमिनिभिर्दुर्निर्गता परमेश्वरी ॥ नीतां मनसमप्रख्याकुञ्जिरूपा महो
 दरा ॥ इत्यद्वैतवदनाववर्तिर्द्विशिरोरुहा ॥ स्वरूपा च विरूपा च त्वनेकाकाररू
 पिणी ॥ कामप्रसादितकरा वामदेवमुवाच ह ॥ यदक्षरपदमुक्त्वा नाहीनं च
 यद्वैत ॥ क्षमामहं तिमिमे देविकस्य वै निश्चलं मनः ॥ ॥ इति श्रीमातिनीदण्ड
 कस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ ॥ अथ पञ्चवदिनीस्य स्तोत्रं माहात्म्या
 ॐ नमः चण्डिकायै ॥ ॥ श्रीरुद्र उवाच ॥ ऐं परमोत्तुते माहात्म्यायै सूक्ष्मदेहे परा
 मरे ॥ एकाकिनी विश्वद्रात्मानादारम्यविन्दुमातिनि ॥ अदेहा सर्वचोपयेत्यचलो

विश्वधारिणी ॥ महाकुण्डलिनी नित्येहं नमो व्यवस्थिते ॥ तोमसूर्याग्निमधे
 स्थे व्योमव्यापी परा परे ॥ ॐ कारविग्रहावस्थे हकारार्द्धरूपिणी ॥ वाताग्रशत
 चासूक्ष्म अनन्ते चाक्षये व्यये ॥ अकारार्द्धकलाधारे पद्मकिंजल्कमाश्रिते ॥ सकला
 रम्यमाहात्म्यायै वरदे लोकपूजिते ॥ एकैकशब्दमध्यस्थे मर्मरुक्ते नदिनि ॥ अ
 ष्टत्रिंशत्कलादधिनेदिनी प्रसूरं धुके ॥ विद्युत्तापानिभा देवि भुजगकुटिलाकृ
 ति ॥ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च शिवश्च सदाशिवः ॥ एते पञ्च महाप्राताः पादमूले व्य
 वस्थिताः ॥ त्रैलोक्यजननी देवि नमस्तेशक्तिरूपिणी ॥ इदं पिङ्गलमध्यस्थे मृगा
 लातनुरूपिणी ॥ विन्दुमध्यशतादेवि कुटिले चार्द्धचन्द्रिके ॥ तुषारकशिकाभासे

द्वादशांतावतं विनि ॥ उमा हृद्देते गौरी द्वादशादित्यवर्चसे ॥ शुभ्य शुभ्या कणवस्थे
 हं सारख्ये प्राणधारिणी ॥ तं वाख्य परमादे विदक्षिणोत्तरशासिनि ॥ नाशाये
 तु समुत्तीर्णे मध्ये स्रुत प्रवाहिनी ॥ हृत्लेखे परमानन्दे तात मुर्ध्नि व्यवस्थिते ॥
 नादघण्ट कलधृष्टे गुणाष्टक समन्विते ॥ स्थूतसूक्ष्मेत्यसंशुभे धर्मा धर्म पुठठ
 ये ॥ कार्यकारण कर्तृत्व त्रिसूत्रे नादविग्रहे ॥ परापरपदे भुजे चैतन्ये सा स्वते द्रुवे ॥ स
 र्ववर्णाधरे देवि गुह्ये तत्त्वति विभुते ॥ शक्तिमूले महाव्यूदे विन्दुवीज समन्विते ॥ अ
 शरीरे महाकाये स सा राणा वतारिणी ॥ जया च विजया चैव जयंती चा पराजिता
 तुं कुरी वीज मध्यास्थे नमस्तपापमोचनी ॥ बंधमोक्ष करि देवी षोडशांते व्यवस्थिते ॥

भेदिनी शक्तिमूले नमहाव्यूह समन्विते ॥ प्रमरी भ्रानरी गौरी मायायंत्र प्रवाहिनी
 स्वयन्द मेरु देवी सक्रोधोन्मत्त मेरुवी ॥ पंचाशद्वर्णरूपस्था त्वया रुद्राः प्रकीर्तिता
 सुमृताख्य रुरुचण्डे नमः कापालिनी शिवे ॥ हं किनी महा माया नमस्तान मेरुवी
 दक्षोत्कटे विद्युमिह तारकाक्षि भयानके ॥ नमामि देवदेवेशि अघोरे घोररूपिणी ॥
 ज्वाता मुखी दूग ~~वृद्ध~~ वती उमा देवी नमोस्तुते ॥ योगिनी वभिषा देवी गौरी रक्ष्मी सर
 स्वती ॥ हंसः त्वहं देवी गोमुखी शक्तिमालिनी ॥ कोटुकी शुभगा देवी दुर्गा
 कात्यायनी शिवा ॥ नित्य क्रिया समारणा तारका चैकाक्षरा परा ॥ पाली माहेश्वरी चै
 व कोमारी वैष्णवी तथा ॥ वाएही चैव माहन्दी चामरादायं मथानना ॥ योग शिष्य हि देवे

१२२

शिकताकविमुचिते ॥ अष्टाष्टक धरिदेवीरशिता बहुकृपिणी ॥ ऐन्द्रा
 चैवगुआनेयीयाम्योने सत्यवाक्यणी ॥ वायव्योचैवकोदेही चेशान्योच
 उदाहता ॥ प्रयागावरुणाकोला अहह साजयंतिका ॥ चरित्रेकाप्रकेचैवदे
 वीकोटगुचाष्टनं ॥ अक्षितोगोरुन्यराडः क्रोधरुन्मनभेदव ॥ कएलीनीच
 राचैवमंहारचैववाष्टनं ॥ तथाकारिह्युमादेवीदेवदूतीनमाजुते ॥ भद्रका
 महादेवीचर्मगुडी नमावहे ॥ महाछुष्यमहाशातेनमत्ते शक्तिरूपिणी ॥
 मूर्धन्यः स्येतिस्वाहोतेदयात्यं कुरुवत्सला ॥ शानार्थितामहाभायेतदिछानिवेदि
 तुं ॥ यत्स्वदं पठतेस्तोत्रं त्रिलक्ष्यं चैवमानवः ॥ प्राप्नोतिचिंतितान्कामान्स्त्रीणां भ

वगुवत्सला ॥ ॥ इति कताठिका न्नायतंत्रे शिवशक्ति शनरणां त्वं माहमाया स्तोत्र
 लमाजुम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१२२
३३

ASHA ARCHIVES

1371

ASHA ARCHIVES